हिंदी विभाग, शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

प्रेमचंद जयंती

प्रेमचंद और भारतीय किसान

व्याख्यान : प्रो. धानसिंह वर्मा

(31 जुलाई , 2021 को सम्पन्न आयोजन का प्रतिवेदन)

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा कथा सम्राट प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन. सिंह के मार्गदर्शन में प्रेमचंद और भारतीय किसान विषय पर ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता प्रोफेसर धानसिंह वर्मा तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ शंकर निषाद ने की। कार्यक्रम के आरंभ में आभासी पटल से जुड़े हुए शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिमेष सुराना ने वक्ताओं का परिचय देते हुए प्रेमचंद के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा–प्रेमचंद का समग्र लेखन जन चेतना और संघर्ष की कथा है। वे स्वतंत्रता आंदोलन के दौर के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उन्होंने किसानों एवं मजदूरों के शोषक अंग्रेजी सत्ता व महाजनी सभ्यता के षड्यंत्र का पर्दाफाश किया है। मुख्य वक्ता प्रोफेसर धानसिंह वर्मा ने कहा कि प्रेमचंद के निधन के 86 वर्ष बाद भी पश्चात जिस तरह प्रेमचंद का सम्पूर्ण साहित्य जगत याद कर रहा है, वह प्रेमचंद के सर्जक व्यक्तित्व व उनकी वैचारिकता का प्रमाण है।

श्री वर्मा ने सत्ता व्यवस्था के विरुद्ध किसान आंदोलनों के अतीत से वर्तमान परिदृश्य का विस्तार से उल्लेख करते हुए कहा कि सत्ता व्यवस्था ने हमेशा महाजनों जमीदारों व पूंजीपतियों के पक्ष में नियम बनाए। उनके संरक्षण में चल रही शोषण की प्रक्रिया को प्रेमचंद ने बहुत निकट से देखा था। इसीलिए उसके यथार्थ को संजीदीकी के साथ चित्रित कर सके। श्री वर्मा ने प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि के पात्र सूरदास के संघर्ष का उदाहरण देते हुए जिस तरह व्यवस्था के विरुद्ध सूरदास ने संघर्ष किया आज उसी जीवटता की आवश्यकता है। सूरदास ने मरने से पहले अंग्रेजी सत्ता को ललकारते हुए यह कहा था – हम हारे तुम जीते, तुम मजे हुए खिलाड़ी हो, और मिलकर खेलते हो। हम बंटे हुए हैं, पर हम तुम्ही से खेलना सीख कर फिर खेलेंगे। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम दौर के अजेय जनता का अमर स्वर है। आज के किसानों को सूरदास के इस संघर्ष से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ शंकर निषाद ने कहा कि सत्ता व्यवस्था की नीति के चलते किसान मात्र मजदूर बनकर रह गए हैं। व्यवस्था को यह समझना चाहिए कि किसान जिस दिन उत्पादन करना बंद कर देगा उस दिन व्यवस्था के सारे ठाट बाट धरे रह जाएंगे। वर्तमान किसान आंदोलन पर अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ शंकर निषाद ने कहा कि किसान हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है व्यवस्था को उनके महत्व को स्वीकार करते हुए सार्थक पहल करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ बलजीत कौर ने आभार व्यक्त किया। इस आयोजन को सफल बनाने में विभाग के सदस्य डॉ.जय प्रकाश, डॉ कृष्णा चटर्जी, डॉ रजनीश कुमार उनरे, डॉ सरिता मिश्र व कुमारी प्रियंका यादव एवं तकनीकी सहयोग के लिए सौरभ सराफ का विशेष सहयोग रहा। इस आयोजन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति आभासी पटल पर रही।

Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

प्राचार्य
शास.वि.या.ता.स्नात.स्वशासी महावि.
दुर्ग (छ.ग.)

Principal
Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

हिन्दी विभाग
शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग
हिन्दी दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

(दिनांक - 14 सितम्बर 2021)

अतिथि वक्ता - डॉ. राजेश दुबे, प्राचार्य, खरोरा, रायपुर
डॉ. प्रेमलता गौरे, प्राचार्य, बेरला, दुर्ग
डॉ. देशबन्धु तिवारी, प्राचार्य, साईं महा., भिलाई

प्रतिवेदन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में हिंदी विभाग द्वारा दिनांक 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आर.एन.सिंह ने किया। आरंभ में विभाग के अध्यक्ष डॉ अभिनेष सुराना ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके पश्चात अतिथि वक्ता डॉ राजेश दुबे ने हिंदी और वैश्वीकरण विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा स्वतंत्रता संग्राम के दौर में गांधी जी और अन्य नेताओं ने हिंदी का प्रचार-प्रसार पर काफी बल दिया था इसलिए हिंदी स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बन गई थी। इसके माध्यम से वे देश की जनता को एकता के सूत्र में जोड़ सके। आजादी के बाद हिंदी भाषा को संपर्क भाषा तो बनाया गया किंतु अंग्रेजी का वर्चस्व बना रहा। आज के वैश्वीकरण के युग में जो भाषा बाजार तथा कारोबार के उपयुक्त है वही आगे बढ़ रही है। भारत की बड़ी आबादी के बीच पहुंचने के लिए विदेशी निवेशक हिंदी सीख रहे हैं पर यह कारोबार तक सीमित है। हिंदी भाषा का यह रूप मानवीय संवेदना के साथ नहीं जुड़ पाता है। डॉ प्रेमलता गौरे ने आज के समय में हिंदी विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा पूरे देश में ऐसा वातावरण बनता जा रहा है कि अंग्रेजी के बिना उसका विकास नहीं हो सकता इसलिए हिंदी भाषा की उपेक्षा हो रही है। एक समय के बाद नई पीढ़ी अपने परिवार के बीच भी अपनी बात कही कर पाएंगे। आज हिंदी को रोजगार तथा प्रशासन की भाषा बनाए जाने की भी आवश्यकता है। तीसरे वक्ता डॉ देशबंधु तिवारी अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा एक राष्ट्र के रूप में हिंदी का विकास स्वतन्त्रता संग्राम के दौर में हुआ था पर हिंदी की स्थिति देश की अन्य भाषाओं से ऊपर नहीं है। संविधान में ही हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार नहीं किया गया है वह संपर्क भाषा, राजकाज की भाषा मात्र है। हम विश्व से संवाद अपनी भाषा में आज भी नहीं कर पाते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने तथा आभार प्रदर्शन डॉ रजनीश उमरे ने किया। इस कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक एवं स्नातकोत्तर कक्षा के विद्यार्थी उपस्थित थे।

14.9.2021

Principal
Govt. V.Y T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

अध्यक्ष हिन्दी विभाग

विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
शास. विश्वनाथ यादव ताम.स्नात.
महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

Principal
Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous

दिनांक 29.12.2021

प्रतिवेदन
महाविद्यालय में हिन्दी साहित्य परिषद का उद्घाटन

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी साहित्य परिषद का गठन किया गया। परिषद का उद्घाटन सुप्रसिध्द साहित्यकार गुलबीर सिंह भाटिया के मुख्य अतिथ्य तथा प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यकम के आरम्भ में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने स्वागत उद्बोधन के साथ परिषद के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात् प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने परिषद का उद्घाटन करते हुए कहा कि यहॉ छात्राओं की अधिक संख्या देखकर खुशी हुई। छात्राऍं साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में आगे आएं जिससे समाज को बदलने में अपनी भूमिका को रेखांकित कर सके। मुख्य अतिथि गुलबी सिंह भाटिया ने परिषद के पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विद्यार्थी इ समंच का उपयोग करें, इससे उनमें साहित्य के प्रति रूचि बढ़ेगी साथ ही साहित्य की समझ भी विकसित होगी। इस अवसर पर उन्होंने देश के विभाजन की त्रासदी पर केन्द्रित अपनी कविताओं का पाठ किया। तथा व्यंग्य रचनाएं पढ़ी। विशेष अतिथि डॉ. शंकर निषाद ने अपने उद्बोधन में साहित्य परिषद के माध्यम से साहित्यिक गतिविधियों को जारी रखने की शुभकामनाएं दी। विशेष अतिथि डॉ. सियाराम शर्मा ने परिषद के पदाधिकारियों को शुभकामना देते हुए कहा कि साहित्य के विद्यार्थियों का उद्देश्य स्पष्ट और समाज सापेक्ष होना चाहिए। इन्हें अपने समय की चुनौतियों को समझते हुए समाज हित में संघर्ष करना चाहिए।

कार्यकम में विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। प्रो. थानसिंह वर्मा ने अतिथियों का परिचय दिया। संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने तथा आभार प्रदर्शन डॉ. जय प्रकाश साव ने किया। कार्यकम में डॉ. बलजीत कौर, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ. ओमकुमारी देवांगन, सरिता मिश्र, प्रियंका यादव के साथ हिन्दी के शोधार्थी तथा बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थीं।

प्राचार्य
शास.वि.या.ता.स्नात.स्वशासी महावि.
दुर्ग (छ.ग.)

हिंदी विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तमस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़

विश्व हिंदी दिवस पर आयोजन

हिन्दी भाषा ही नहीं हमारी सांस्कृतिक विरासत है ।

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 10 जनवरी 'विश्व हिन्दी दिवस' पर "हिन्दी का महत्व" विषय पर गरिमामय आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन.सिंह ने विश्व हिन्दी दिवस की शुभकामना देते हुए कहा कि हिन्दी हमारी आजादी की स्रोत भाषा है यह जितनी कोमल संवेदनशील है उतनी ही साहसी तथा पराक्रमी है । हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अभिनेष सुराना ने आयोजन पर आधार वक्तव्य दिया। हिन्दी के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी केवल हमारी मातृभाषा ही नहीं बल्कि हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी है। आज हिन्दी का क्षेत्र व्यापक है वर्तमान में हिन्दी भारत के अलावा अन्य देशों में भी बोली जाती है तथा विदेशों के विश्वविद्यालयों में इसका पाठ्यक्रम संचालित है। हिन्दी आज संस्कार के साथ रोजगार की भी भाषा है। जितने रोजगार आज हिन्दी में है वे अन्य क्षेत्र में नहीं है लेकिन हिन्दी में रोजगार पाने के लिए हिन्दी के प्रति समर्पण प्रतिबद्धता और परिपक्वता का होना आवश्यक है।

हिन्दी विभाग के प्राध्यापक एवं अंचल के ख्यातिनाम समीक्षक डॉ जयप्रकाश ने हिन्दी के अतीत एवं वर्तमान परिदृश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि पहले की तुलना में आज हिन्दी ज्यादा समृद्ध और प्रतिष्ठित है उन्होंने आगे कहा कि विश्व में हिन्दी का विकास करने और एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर इसे प्रचारित एवं प्रसारित करने के उद्देश पर विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई। प्रथम हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ इसलिए इस दिन को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था।1975 के बाद कई देशों जैसे मोरीशस, यूनाइटेड किंगडम, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया यह हर तीन साल में एक बार मनाया जाता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्राध्यापक थानसिंग वर्मा ने कहा कि ज्यादातर विद्यार्थी सोचते हैं हिन्दी पढ़ कर वे शिक्षक ही बनेंगे लेकिन आज हिन्दी में रोजगार के व्यापक अवसर है वे पत्रकारिता की ओर जा सकते हैं, संचार के बढ़ते माध्यमों का लाभ लेते हुए पटकथा लेखक बन सकते हैं, स्क्रिप्ट राइटर बन सकते हैं, अच्छी हिन्दी के साथ किसी एक भाषा पर महारत हासिल करने के बाद वे अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने किया कार्यक्रम में डॉ बलजीत कौर डॉ रजनीश उमरे डॉ ओम कुमारी देवांगन डॉ.सरिता मिश्र, प्रियंका यादव के साथ विभाग के शोधार्थी व बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

10/01/2022
विभागाध्यक्ष

प्राचार्य
Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)
नैक ग्रेड–ए+, सी.पी.ई.–फेस–3, डी.बी.टी.–स्टार कालेज
फोन नं. 0788–2350888, फैक्स नं. 0788–2350888,
Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

दुर्ग, दिनांक 22/02/2022

प्रेस विज्ञप्ति

मातृभाषा दिवस अपनी भाषा के प्रति सम्मान का दिवस है

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्याल, दुर्ग में हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 21 फरवरी 2022 को विश्व मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाईन वेबीनार का आयोजन किया गया कार्यक्रम के प्रारंभ में विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने स्वागत उद्बोधन करते हुए कहा भाषा हमारी पुरखों की विरासत है। भाषा के माध्यम से हम सोचते है अपने विचारों को व्यक्त करते है। दिनांक 21 फरवरी को मातृ दिवस के रूप में उसे याद करते हैं इस दिन सिर्फ भाषा की चर्चा ही नही भाषा के प्रति हम सम्मान प्रकट करते है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि माँ और मातृभाषा का हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। हम दादी–नानी के मूल्यवान किस्से सुनकर बड़े हुए हमारी आज की नई पीढ़ी तकनीक के प्रभाव से अपनी मातृभाषा से दूर होती चली गई है। उन्हे मातृभाषा के महत्व को समझना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. जयप्रकाश ने विश्व मातृभाषा दिवस मनाये जाने के इतिहास की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी और तकनीक मनुष्य के जीवन को सुन्दर व सुविधा जनक बनाने के लिए है लेकिन साम्राज्यवादी ताकतों ने इस पर कब्जा करके न केवल संसाधनों पर अधिकार कर लिया बल्कि उनकी भाषा भी औपनिवेशिक वर्चस्व के चलते दुनिया की तमाम भाषाएं एक–एक कर मर रही है उनमें हमारी हिन्दी भाषा भी है। यह समय भाषा और संस्कृति के लिहाज से संकट का समय है। धर्म और राजनीति की तरह भाषा और संस्कृति विभाजन का काम नही करती। इसलिए भाषायी विविधता एवं सांस्कृतिक बहुलता के साथ विलुप्त हो रही भाषाओं को व्यवहार में लाकर बचाये रखना आवश्यक है । प्रो. शानसिंह वर्मा ने कहा दुनिया की छोटी–बड़ी भाषाओं और बोलियों को बचाये रखने की आवश्यता है क्योंकि उससे महान सभ्यता के विकास एवं उनकी संस्कृति का इतिहास सुरक्षित रह सके। कार्यक्रम के दूसरे चरण में विभिन्न भाषाओं के प्रमुख कवियों की कविताओं का पाठ किया गया जिसमें डॉ. सोमाली गुप्ता ने (बंगला), डॉ. ज्योति धारकर (मराठी), डॉ. मीना मान (उड़िया), डॉ. मर्सी जार्ज (मलयालम), डॉ. के. पद्मावती (तेलगू), डॉ. तरलोचन कौर (पंजाबी), डॉ. ओम कुमारी (छत्तीसगढ़ी), कु. प्रियंका यादव (हिन्दी), एवं डॉ. जनेन्द्र कुमार दीवान ने (संस्कृत) में काव्य पाठ किया । कार्यक्रम का संचालन डॉ. रजनीश उमरे एवं आभार प्रदर्शन डॉ. बलजीत कौर ने किया। कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ. कृष्णा चटर्जी, डॉ. सरिता मिश्र के अलावा बड़ी संख्या में लेखक, प्राध्यापक/शोधार्थी छात्र एवं विद्यार्थीगण सम्मिलित हुए।

प्रति,

संपादक/ब्यूरो चीफ
दैनिक .....दुर्ग
इस निवेदन के साथ कि कृपया इसे जनहित में समाचार के रूप में प्रकाशित करने का कष्ट करें।

प्राचार्य
शासा.वि.ना.ता.स्नात.स्व.महावि.,दुर्ग (छ.ग.)
Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)

प्रेस विज्ञप्ति

दिनाँक : 17/06/2022, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

रचनाकार किसी भी स्थान का हो, मूलतः वह रचनाकार ही होता है : डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी

विज्ञान महाविद्यालय के हिंदी विभाग में व्याख्यान

"रचनाकार देश-प्रदेश के किसी भी कोने का क्यों न हो, मूलतः वह रचनाकार ही होता है। उसे स्थानीयता में सीमित नहीं किया जा सकता। साहित्य में समकालीनता काल-विशेष तक सीमित नहीं होती बल्कि रचना की गति और अनुभव का खरापन उसे समय से जोड़ता है। इसी अर्थ में किसी भी युग का रचनाकार हमारा समकालीन हो सकता है।" आज शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वावधान में "हिन्दी का समकालीन रचना परिदृश्य विषय" पर केंद्रित अपने व्याख्यान में विख्यात साहित्यकार तथा महिला महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पूर्व प्राचार्य डॉ. चन्द्रकला त्रिपाठी ने ये बातें कही। उन्होंने समकालीनता का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी सीमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने तुलसीदास, प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, मुक्तिबोध जैसे प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी दूरदृष्टि पर अपनी बात रखी। तुलसीदास की पंक्तियों के माध्यम से राजा के उत्तरदायित्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने प्रजाहित के चिंतन को आज के समय में भी प्रासंगिक निरूपित किया। मुक्तिबोध के अंतर्मन की पीड़ा और भावबोध पर भी उन्होंने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। समकालीन नए रचनाकारों की दृष्टि व अस्मितामूलक विभिन्न विमर्श जैसे आदिवासी, दलित, स्त्री चिंतन को स्पष्ट करते हुए समाज के उपेक्षित वर्ग के संघर्ष एवं वर्तमान में उनकी बदली हुई परिस्थितियों का उल्लेख भी उन्होंने किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने 21 वीं सदी के रचनाकारों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए विषय वस्तु की नवीनता पर भी प्रकाश डाला साथ ही वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप आज की रचनाओं में विषयवस्तुओं में होने वाले

परिवर्तन और सोशल मीडिया तथा पुरस्कारों के प्रभाव को भी रेखांकित किया। समकालीन साहित्य के रचना परिदृश्य पर समग्र रूप से उन्होंने अपनी बात रखी।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन में पूरे महाविद्यालय परिवार की ओर से डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी का अभिनंदन करते हुए इस आयोजन को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। समकालीन हिन्दी साहित्य की उपादेयता स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि आज अनेक शोधार्थियों द्वारा इससे संबंधित विषयवस्तुओं पर शोध कार्य किया जा रहा है इसलिए इसका महत्व स्वयंसिद्ध है। उन्होंने अपने उद्बोधन में छत्तीसगढ़ के समकालीन रचनाकारों पर किये जा रहे शोध कार्यों का उल्लेख भी किया और स्थानीयता की दृष्टि से इसे महत्त्वपूर्ण बताया।

प्रारम्भ में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना ने स्वागत किया। उन्होंने विषय की प्रस्तावना के रूप में संक्षिप्त वक्तव्य में हिन्दी की विविध सरणियों में समकालीन रचना परिदृश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने समकालीनता की अवधारणा को स्पष्ट किया।

प्रारम्भ में माँ सरस्वती के छायाचित्र में माल्यार्पण कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत हुई। तत्पश्चात अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया गया। ।

डॉ. त्रिपाठी के व्याख्यान के पश्चात विद्यार्थियों, शोधार्थियों ने अपनी शंकाओं के समाधान के लिए शोधार्थी प्रियंका यादव, सौरभ सराफ, तरुण साहू, छात्र सौरभ साहू आदि ने स्त्री विमर्श, साम्प्रदायिकता, विद्रोही चेतना, समकालीनता की समयसीमा जैसे मुद्दों पर प्रश्न पूछे जिसका डॉ. त्रिपाठी ने विस्तृत रूप से उत्तर दिया। अंत में शोधार्थी रसना मुखर्जी ने आभार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर मंच संचालन डॉ. रजनीश उमरे द्वारा किया गया।

उक्त आयोजन में हिन्दी विभाग से डॉ. बलजीत कौर, डॉ. जयप्रकाश साव, डॉ. शंकर निषाद (सेवानिवृत्त), डॉ. ओमकुमारी देवांगन, डॉ. सरिता मिश्र, प्रियंका यादव, डॉ. ओ. पी. गुप्ता (विभागाध्यक्ष वाणिज्य), डॉ. ए. के. पाण्डेय (विभागाध्यक्ष इतिहास), डॉ. शक़ील हुसैन (विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान), डॉ. संध्या अग्रवाल (विभागाध्यक्ष एंथ्रोपोलॉजी), अर्थशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. के. पद्मावती, डॉ. अंशुमाला चन्दनगर, जनेन्द्र दीवान

(विभागाध्यक्ष संस्कृत), डॉ. एस. डी. देशमुख (विभागाध्यक्ष भूगर्भशास्त्र), शासकीय महाविद्यालय बेरला की प्राचार्य डॉ. प्रेमलता गौरे, उतई महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सियाराम शर्मा, सहायक प्राध्यापक- हिन्दी डॉ. रीता गुप्ता, शासकीय महाविद्यालय मचांदूर में सहायक प्राध्यापक- हिन्दी डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी, डॉ. अल्पना त्रिपाठी, डॉ. सुबोध देवांगन सहित स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों, शोधार्थियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

7.6.2022

डॉ. अभिनेष सुराना
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
शास. विश्वनाथ यादव ताम. स्नात.
महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

प्राचार्य

शास. वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महा. दुर्ग (छ.ग.)

हिन्दी विभाग

दिनांक 16 मार्च 2022

ऑनलाईन राष्ट्रीय बेबिनार

प्रतिवेदन

फाग का रंग लोक का रंग है - डॉक्टर जीवन यदु

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में दिनांक 16 मार्च 2022 को हिंदी विभाग द्वारा 'फाग का लोकरंग' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय बेबिनार का आयोजन किया गया ।आरंभ में विभाग के अध्यक्ष डॉ अभिनेष सुराना ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया तथा कार्यक्रम के स्वरुप पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आर एन सिंह ने आयोजन के सफलता की शुभकामना देते हुए कहा कि लोक पर्वों का सांस्कृतिक महत्व है हमारे लोक पर्व लोगों को आपस में जोड़ते हैं। फाग गीत पर केंद्रित इस आयोजन से उसके लोक तथा सांस्कृतिक पक्ष का उद्घाटन होगा इससे हमारे छात्र तथा शोधार्थी लाभान्वित होंगे। इसके पश्चात 'फाग का लोक रंग 'विषय पर आधार व्यक्त वक्तव्य देते हुए विभाग के प्राध्यापक डॉ जयप्रकाश ने कहा _ फाग का पर्व प्रकृति और मनुष्य के संबंध को परिभाषित करता है। प्रकृति की सहजता ,सरलता मनुष्य जीवन का एक हिस्सा है लेकिन सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य और प्रकृति का संबंध टूट सा गया है। उन्होंने कहा कि पिछले दो-तीन दशकों से देश में पर्व एक औपचारिक कर्मकांड में बदलने लगा है। सही मायने में लोकपर्वो का जन्म लोगों को आपस में जोड़ने के लिए हुआ था लेकिन आज उसका स्वरूप खंडित हो गया है। फाग हमारी चेतना का विस्तार करता है इसलिए फाग गीतों के सहजता ,सरलता को आज बनाए रखने की जरूरत है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉक्टर जीवन यदु ने कहा की फाग का रंग लोक का रंग है जो फागुन मास आते ही सबको अपने रंग में सराबोर कर देता है यहां सब बराबर हो जाते हैं क्या अमीर और क्या गरीब ।उन्होंने आगे कहा कि यह लोक पर्व प्रेम तथा सद्भाव का संदेश लेकर आता है। लोक साहित्य मर्मज्ञ डॉक्टर पीसी लाल यादव ने कहा कि फाग का पर्व प्रकृति और मनुष्य के साहचर्य का पर्व है ।फागुन के महीने में बासंती पवन के साथ सब के सब झूमते दिखाई देते हैं। उन्होंने फाग गीत की दो पंक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा _

पिंवरी पहिरे सरसों झूमे
पुरवइया बइहा झूमें
ढोलक बजावे ठेमना चना।'

फाग का पर्व ग्राम संस्कृति की झांकी है उन्होंने होलिका दहन के मिथकीय प्रतीक का उल्लेख करते हुए कहा यह शोषक वर्ग से संघर्ष और मुक्ति का पर्व है।उन्हो यह केवल राधा कृष्ण तथा अवध के राम तक सीमित नहीं है इसमें प्रकृति, मानवीय प्रेम से लेकर राष्ट्र राष्ट्रीयता और आजादी की चेतना भी समाहित है। कार्यक्रम में डा अनुसुइया अग्रवाल (महासमुंद),डा शंकरमुनि राय(राजनांदगांव) रजत कृष्ण (बागबाहरा) ने अपने विचार व्यक्त किए। आरंभ मेंडा रजनीश उमरे के निर्देशन में स्थानीय फाग मंडली द्वारा फाग गीतों का गायन किया गया । अतिथि वक्ताओं का परिचय डॉक्टर सरिता मिश्र एवं कुमारी प्रियंका यादव ने दिया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र झारखंड तथा छत्तीसगढ़ के 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया तथा अपने शोध पत्रो का वाचन कियाऔर फाग गीतों के विविध विषय -फाग गीतों में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों, फाग गीतों का लोक स्वरूप ,फाग गीतों में आध्यात्मिकता, फाग गीतो में इतिहास तथा कृषक संस्कृति पर अपने अपने ढंग से विचार व्यक्त किए । कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक डॉ बलजीत कौर प्रो थानसिंह,डॉ कृष्णा चटजी के अलावा बड़ी संख्या में शोध -छात्र सम्मिलित हुए । कार्यक्रम का संचालन डा रजनीश उमरे किया तथा आभार प्रदर्शन डाओम कुमारी ने किया।

Principal
Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous
College Durg (C.G.)